TECHE UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4443

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ दूहा ॥ सील सखी जग कौ नहीं सील वडौ संसार । सील वेलनै सख घणु पाणि नव गोपार ॥ जीव लिखावै कु सील का ॥ कुकि स
ला नाम । सील वंती अंजणा तणौ रास जण अणि राम । अवदातो ॥ पहिके डे हीपादेन फा । जव दुरव नेजल जी नगवंतसी । कर्म का
शुरुंका कपस । घरनव पाप नी गरएए ल ग्रंल ती । रस्सा एक ससी अंजण द्वारादवा सती सील से तै प सो । विरह की वलेरे वेराग
से जमणकलीन गड स्कर लोकती ॥ ससी मै सिर मवी अंजणा ॥ वेसरि ख्या घरजेवनी आमलो । नामे हीन नि ग्रसप जे ॥ दूलहे न
जन कही हीन व दुःख जाय तो ॥ रस दौ जिमे संदरी वेदिए । राजा दौ रिवव त पे घरवी गतो । वाजग्ले नपवन गरा । कंवर ने भोग
मवंगी से हतो । सतीरे वेदु त्रिएली पनाप्रेमसे नापती नै घर नार तो ॥ अंजणा सती रै सकल वली । तारन तुकीरै सील लाज रहै
॥ सवंच से कुमन कुमार वाता ॥ रल कुमारी नै लाजु रे पास तो ॥ जादेव जुदर जोपी करी ॥ दार का दहादे वी केरी नपवन जाय
तो ॥ दरलही गंगा ना वे दिए । जिण राज जो मीमनधरसी वैरागलो ॥ राज मति पम द जिण । जिण श्री संसार नौ की धीरे त्यागतो । स
वनह ना जारे वारनी बे ॥ ने नुम दरो आहार दी धीरे माहा वीर तो । वालकुमारि कुइ साधनी ॥ गुण तलपा लन मद नवतीर
तो ॥ नलेदन दंतीरे टूस सखा ॥ से रूपवती ना नी रही वनमाहि तो । मान मंदोदरी राव ण । तेतो कुटै वतारी कारी भी मपुर जाय ल
तो ॥ नस । सोएण रथावरने सुंदरी । जीवा ने सका दीदी मा राख्यी सील तो ॥ नवन सई मनापे स पकुरी ॥ मेलो मदोदरी लंका
दिली नलो ॥ सील वृ संस्यारी ॥ करकरे । रिवजुद्र कथा कहीरे अनेक तो ॥ सेह बांडु सर्वे सा धे ॥ हमी अंजणा रा गुण वी
कडु रे निसमतो ॥ इस ॥ नोम वालीरे रलीया मनलो ॥ राजकरे सिहारा वसन जन प्रावलतो ॥ अंजणा रा गुण मा नव्या ॥ ए
कपातुपरे श्रासिमलो घ्याल तो ॥ विरवे सीरे गरायत लो । लिवारे वलेरपुणे हेंथे यतो । कवि जन राज प्रकासज्ञो य
भ्रहेर श्रीए ज्यौ गरलिपुला कायलो ॥ ७ ॥ स ॥ महंद्रपुरी नगजाए ॥ राजा महेंद्र ने सिल ण काम लो ॥ तमपट राणी ठे
नदी ॥ मनो वेगा छे जी से हरतणी नाम लो ॥ पुत्र सौ रयने निरमलो ॥ कुंवर रु माने दृश सत कां प्रसलो ॥ के हेथी जाइ एकाय 1
मली ॥ अंजणा सुंदरी सेहरतणी नाम लो ॥ ८ ॥ स ॥ सुपने काली रवाल का ॥ मात ने जीवण की पीला ते हतो ॥ वेधव सौ नी
विवेन दी ॥ लाज की लेफी ने गुण निधानतो ॥ सर्वे विद्यापति सुंदरी ॥ वालती चाले हे गज गति गेलतो ॥ सजन मन कुने

अंजना
२

फरणमती॥ बोलती नै लेजावो मधुरी वाणरों॥ दिनरवा मे जाले वयं वेलसौ॥ ९ सासुदी नर जोबन माहि पड॥ कुमरी व
सुरजा॥ सजन रूप मती॥ बोले मधारी वाण॥ १० एक समे सिणगार कर॥ आइ पिता के पास॥ पुत्री देष राजा हरषीयो॥
कुवो वरस कुलास॥ ११ देषी भुजबालदी॥ देषे पूजा कीइ॥ वर घर सरीषो जो मीले॥ तो कुसीजाईए॥ १२ हो न हिवेराय
प्रधान तेडावीया॥ अंजना वर सषो करे रो वीचार तो॥ एक कराव ल दीनी॥ एनी को कहे दीजीये मुकुमार तो॥ वरदत्त प

कीवि रुपवंतो॥ जोबन वय निहाल पसी जो मतो॥ वली अत्यारे तप करी॥ वलीजनील में पा म सीमो वतो॥ १३ सानुवरतो नहीं
का मरे॥ मी घाकरे मारी अरसी॥ घणा जीनकातो॥ तिनली कन्या ने रूप न दी॥ मारीरने हपजे अरली घणा कुप तो॥ म
रत मनु शीलतोरा जीयो॥ रामवहिलाद सौ विद्याधर जाणतो॥ १४ तस घर पुत्र छेदी पतो॥ पवन जी लजन की मो
प्रमाणतो॥ अंजनारा गुण सांभल्या॥ देस विदेस मे नाखे ठ ष्याल तो॥ निरपतो त्री पत पा मे नदी॥ पवनजी प्रीत्रीने इम
करै॥ आप फीसुप की रीते जो वण जाइ सो॥ १२ पवन जी लाग्यारे नीर बन॥ परदेस मी श्रीनि ची घालीर की
इछतो॥ निर्वेला श्रीपत पामि नही॥ मनवीदी गीरे रवीस ले रहट सो॥ देषी राजा वदे लगाणा॥ बोल सी बोले छे स
बीस को मतो॥ १३ वे ही सी घासण अजाणा वि किपा मे सोने नासो लेणा वेद लो॥ मित्र आचरण अंजो घरया॥
नारा कै मा॥ कि जी मपुन मे चदतो॥ विस्तम लोइ म ठाव रे॥ नाह जी जी डी मीली ए ण संसार सौ॥ ति नो हो वदे म
जी दीए सेदली पा मी छे अंजणा मार सो॥ १४ वीजी सषी इम कहे रे पहिलो वे रची तब्यो जे सो ए
वाहो पवन जी वर न सी॥ वर्स आवारे तप करी ले रसो॥ पांचे ही इन्द्री हो जीपसी॥ वरसें बावीस मे पाम
सी मो षसो॥ लिए करीव्या वजबर जीयो॥ की त्या ने वरस ण दोष सी इ वसी॥ १५ जीजी सषी इम
वरे पहिलो जीवरमन जी॥ अंजणा सुण यह की इम जे वी॥ धन २ तेनर नो अवतार सो॥ कर्मकाया तणा कापे
सी॥ वुकि मोदो पाम सी अवतरण पार तो॥ पाय वाढ सेपुर सना॥ वीकार जी मी ने नासुरे॥ सी सलो॥ पवन जी ने
चारे मरजल्यो॥ मन माहे आलोचे अतघरी मसो॥ १६॥ पवन जी मन माहि चिंतवे॥ धनुष चढावी ने सा

२

॥ पवन जी मन माहि चिंतवे॥ कुं पषा रिने सां धरे वाण तो॥ मोथरे अवगुण नो लसी॥ पर तणा परसे मान करे रे न वाण
तो॥ मंत्री तिने वाद्यधरि॥ नारि नेन रन हि घालिय यावतो॥ पायुनो॥ निषो कीध कल्यो॥ अगले घाली ने पर मे लि जाय
तो॥ १७॥ पवन जी मन मे विचारी मो॥ एलो रूप कहीने देष्यो॥ मतो॥ मन म दिनै लाठी वामणी ए हे मो जि सजो मोन
ही कर्म चंना लसो॥ पुरुष परसक मने रत॥ पवन जी मीते इसो रे अ जाय तो॥ मेलकु तो एहमे वर घणा॥ परणीने परहेस
लीजु व पाय तो॥ १८॥ ल ग्न लीदिन आविया॥ ढोल इ ग्रमाने घुरे रे निसाण तो॥ राणो रे वास कुमी ला॥ नाव सी
तिमरेने आप्या ते जाण सी॥ महेदे राजा सा मो आवीयो॥ वर नवी देषि ने आने द्या मतो॥ ध वलमा वेर ष सर प डो
अंजणा रो वरजो व जायतो॥ १९॥ सोले परराय आ विषो॥ अंजणा उपरे इसी रे अ मो वतो॥ सा नल राय राणो पये
नामल चंवहि छे २८ २ सावलो॥ षवन मन ना वे गोर मी देष वर सा कका वन लावतो॥ वर ने विमास एअली घणी जा
ए जो संग सा ल्य निते जायसी॥ २०॥ रूपा तणा रेन दप र च्या॥ सोना ना कलस सो नानली॥ को वेर तो॥ सोना ना प
व मी त्याजना॥ अंजणा पवन जी वे जाने वेद रो॥ हथ लेवे ति हां मेवस्या॥ अंजणा ने पणि हाले तिवार तो॥ अ
सरव ज पाव्या किया॥ जाले के इसे मेघू हि पीअंगार सौ॥ २१॥ सा पर णीपर ति छ ने उत रुया॥ करिय परष णी अ
जेणा लाल तो॥ गजरथ आव्या ॥ अ लघणा ताजा तुरं गनै देस विलास तो॥ धन कण मोती हो आपिया॥ आपि के क
न कता वि व कुरेती प्रसौ॥ वस्त्र माल नै अमलक रि पाव से नारि तणी पुठे छे जो पता॥ २२॥ हि वे रतन पुरि सो प्रास
वस्या॥ माणे दे॥ आयो ले ख पधि लारतो॥ अंजणा पायपु जो कर॥ सक लसनी थी इम जय फ ल्यो अजसी॥ सा कस ण
पाय पुजीया॥ आव्या वे अ जेप रणे र युग अमीलतो॥ पाम सेआव राजा रिया॥ वनडु मारे रे जी व संतो लेतो॥ २३॥ स
दुरा॥ परणीने मेलीति हां॥ फकी मह लम झार॥ अहि का चलिय रे॥ वलि मुजी सार॥ अंतर दे ज कुवें न हि मल ने
रनहे य॥ नेह विकु ली लेहनी॥ बोस मन नहि कोय॥ २५ अंजणा उपर पवन जी॥ रतन वें छे नाद विरहदी वानल
गे॥ कवेदिया रे माय॥ २॥ दोख विरहनी आवीरे फ क मी॥ वस्त्र माली नर मो ली जे इसी॥ ने करी कुमर आउ

2

धरी।गावस गंधर्वरी धीरे सेरस्तो। वस्त्र आचलेसीइ मोकल्या। जालमाहा के लते ने सोचसी अंजना। वस्त्र कामीनेव
टका कीया। वस्त्र आनेलीआव्या रे मेरा तो।२४ स। वस्त्र आलावीलखी पाइ। जावि ने अंजणा कि धोजीसाव सा। जो
स्का कुमस्ते मोकली। आपणो उपरे इ सोरे अ जाव्ता। अंजणा आमे अ सासरो। मेस्ता कामीन स्त की धी अनेक
सा। अनेनर दिसेरे निरमलो। कोइक आपणा कमे विसेयसो।२५ स। अंजणा वेठी रे मालीये पवनजी तुरीधी ता
कणजाय सो। आवता जावता निरखसा दिन रहवं वेमन भायसो। पवनजी को परे परजसे। नारी तो आलोछे अ
तिष्ठु पीतसो। जालेनारि रखेनीरखसी। गोषीरे अस्मी करों छे जीससो।२६ स। दुहो। निज रनि हाल्यो नोदस्से।
लिषा ओल कुनीरले नविसरे। सालसभो सालेसं। के
व१ जे अस्त गे नाट। आ गई लो लाभ घणो। विरह नाकीनाट। एवीलकु नीरले नविसरे। सालसमो सालेसं। के
• तवितारितनउ पजे। आरस्त असदालेला।२। मातसासेनेलाफ ली। सासासाके सरा सान दुष्ट। कतवि कथी
का प्रसी। निचे देवनी ए। २७ पवनजीरी पद मली। पमे माहा स्मवका रा नाहनेदकरे नदि। तन संको चेनार
।दीसे। कुमादनीए चेरदनदीना रविवीन कमल खजोग। कं सवी ना वीनाज्युम रमी। मुरआ। फरे तिम
मोण। ५ पं चसेमावरो जादीया। राशरंभली बकु वरजे रेपुत सो। अंजणासतीरे सल पणी। एवं कुमे सकपीय
नीजघरसात सा। मोटा हो कुलसणी तुपनी। राजा ने मेहदेत लीव देवी लाज सो। अंजणा आदे कीजीये। ए
मक्हे कैतु मती सयव हिल्योदसो।२७। आलाप्रणाका वालीमा। वे हले दो आणवक वीर सो। अंजणा क
नारि आली ए मोने अन आ नुपए। कल्या वीर सो। कुमर मन माने नहि। पीहर आशने कुसक रुवा
सो। देमरमा गोरे वालीमो। मासपीला दुख करे दोने ससतो।२८ स। रारे रस सवी चेवे गया। एकथा
उपरे एसलो सवे भलो। रासणा राणो नेवरने। मोहो माहि मुपनो अलीघणी देवतो। गजरथ सुरी एर पाय
खा। फ लालो पायक नरसफे रसो। करासां वतसिए मारिया। जोतस्या रथ वाजि रिण नेरते
स।२९। तेमो विद्याधर मोकल्यो। एक तेमी आयो राय पदि लादसो। जे तले राय से न्यासफे। प

नदीक दे गमे चलसस्वादसो। अवधसालामाहि से स्त्रा करमाहि धनुष लीधा तिसा कलसो। तुमे घरवेवाली लाव
के पुत्र जायसणो एहपू माणसो ३० स पवनजी चालारे कल्बकमे फलनकीधीरे दमसणीसारसो। दूरण कीरै राय
रायसाग स्त नीरकु मारजो स्मएकवीरसो। वस्त्रमालामारीवेनमी सतुधसीषदी जे मा जमायसो। दहिना
वाम नरी करी मारग माहि ते नीरहिजायसो।३१ स। कनक कचोले दहि नखो स्वकनर काजसापीले इमी
जायसो। कटक जालावीतवांदसी तिहानमण करीने कुलाग स्तपायसो। जासी अंजणा आदरी। राजनरन मा
हि दिवसीनो कसी जंगलगपा जंगलसीनहि। त्यालाग मनमाहि करस्त संतोषसो।३२ स। गयदरटीदल से
घरे मातपिता ने स्त नामी रे सीससो। सजन सकु ने संतोषीया अंजणा उपरे अलघणी रीससो। दुरण कीरे
दीष्ट जयमी चतुर चीतारारे जोयो चीतरामसो। पुतलीकीधीरे नाजीसी एहचितारो आयो रदामसो।
३३ स। मित्री कहेनहि पुतली जीतन जीगए अंजणानारसो। सां जलरायरासोथयो मार्गमाहि मीलीतीएवा
रसो। एसठे लीअलगीयणी कटक मेजा रसासामी मिलीसामसो। वस्त्रमालामोदि कर भवा मुर्षदी
सेवाइतु मतणो स्वामसो।३४ स। तेहि साहिरे बीकरी जेह लेघालीने घरमाहि जायसो। हिवेकटक चाल्या
रावणासणो जीवतो चालीयो पुतलामा रसो। जीवने जोषम अलघणो पोतेछे माहि रे अलघणी पाय
सो गहलीए एवीने बोलीये कटक जालावका हदी थी दसरापसो।३५ स। अंजणा कहे सारण सांदरी
दुखमाहि दुखमोने तुपनो आजसो। पापीसा कीधीरे वालली सासरामाहि भारि नीगमी लाजसो। सासुने
मासखि मदाष न हरवे वीजिनजी रान्नामजपे ससो। चारित्र मनमाहि चीलवे अवसर जाणीने संज
मलेससो।३६ स। हिवे नगरथ कीदल संचस्यो मारग दुरजीधारे मेलाणसो। चवीलिहाएट लवले सो
वसीतिमर ने आथम्यो जाणसो। पवनजी मित्रीने इम कहे नारीतणो नविलीव जेरेनामसो। पुर्षप
रस्त मनरमे इणचक वीनीवरमुकीरे जामसो।३७ स। मित्री कहे साणा वीनसी तुमे एवसोका इ

अंजणा
२

एमं धर्मतो मालसतीमांहि एमुलजी अहो निसरूवलीजीन तणा धर्मतो पुर्वपरायो वले नही वचनवरासि
काइ कीधीरे रीसतो सील सरोवर झुलती इण मुलकामी जाणी नामोरे रीसतो ३८ स दुहा वच
कणीमित्रीतणा कीमन थयो राय कुमर मित्रीने कहे सामारी वा य १ चोटी का मज मे कीयो सतावी
नीजनार वचन आकरा रामे करा किम कंवे त्रुटक वार २ ढाल वचन जीमित्री ने पुछीयो कटक
जातां नहिं रीमास्या ताणा वलो पर्मेजाते सो वर ज्याह सै मठिला मांहि लाज मायने ना पणेम तो मित्रीक
हि वाना चालस्य देहीसेनापतीने दीवी सीषतो जात्रा करी ... अम्हे आवस्या त्यारे गेकटक नी करे तु
मरि मतो ३९ स प्रणमत तीरा अणुवीया अं... जना मंदिरनाय ठाई किमा फतो वसतमाला रेनोगलो
वचन तलाप वो लेतफाम तो कर्णपुर्वे सेन्या गया पंव ट वो कर तोघर मांय तो पूत मेंराय ने बीन वी
तेतणीजीन कुदे सं कढीयतो ४० स परद वस्तमित्री इमकहे एतो करस्यो वैराय पहिलार नो नंद
अंजणा कहरो सिरधणी वसविध्याधर दीपक चंद तो वस्तमाला विठलध्यो ने छणनिलाले हो अप अ...
णस्वाम तो सती एस माय क जिलालोतिल त्रगराय रचे इणकाम तो ४१ स धर्म त्रिया करे अंजणा
अवीनेपवन नली ... बोलतो मारा सर्ति मांहि तुनी रमती अहो नी सर तीमीनणे धर्मे ... अंबोलतो
वचनवरासी तोनेदुहवी अमे तुमने चले कीधी रे अराधतो हाथ जोडीनेनी चोपम्यो षमीरम
हे रोण अपराध तो ४२ स अजुना अविपायनमी एहवो कायुवो लो अविच्चार नी तो जेदवि
हो पमतणी पानही सेदवी दो पुले सणी होयना रतो हाथ जोडीने इम कहे वचन सकल मणा बोलवे
णतो प्रपतिछिणयं किमपाडय इण पपुर की टीने कीधा शमे णतो ४३ स तिनदी रसतिण घर रहा प २
रसनोजन पुरसे अनेक लो विजलो वारठो ले सबी छिमला वालीने आपे वीसे षतो नाटक ना चवकया
वती वीणवजावेने मारे भोगी ततो पवजी आणंदणा मी रह्या अंजणा सुकाय तणी घणी रेवी ततो ४४

हिवे पवन गत तुमे आविया रायराणी ने जणा वजी जायतो जेनुअसप कुचेदम तणी चाहना आजवो
आप्या अहि ना णतो वस्तमालाने तेमी कुटी अंजणा मांहि ... चिंतामणरसन तो दांतने जीन स्फ जो लावि
रातादिवस ए हने ना करज्यो जतनतो ४५ स वस्तमालाने ते मिकरी पवनजी मित्री ए कीधी जुहारतो ४
न कहाणो लीधी आणीया कुंचि यासहित आप्या रे नमारतो १२ हस्तमित्री इम कहे हिणमांहि राषजो
राय नीदहतो वेलाहि घरे पधारज्यो थारी वाट जोवा जाली सायणे देतो ४६ स मोष दीधी अंजणा जा
इणा हिया मांहि सबंदे मन जोडाणतो पुत्र सो आवसी वर णतो पुत्री करीन्यारे २ साथतो हुंरजे ... य
टक वेवर ... लोक तणा तिता प मैसी आरतो भनी ट वावो कहो मर्ण जलो हिणनही त
जीहार तो ४७ स पोलष कीरे पाछी वली नेमादो कुटी आसतणी धारतो कठण व चन
कह्या कंथने सनेह वाधी रोइ घणी वा रतो वस्तमाला आवी धीरवे वाइहिव मा आवो
समाय कवालतो पवनव वार थे दिलधरो ववदे जीने मरो नेमरो करो रेवीचारतो ४८
कधुसमाय करु जे चवरे दिवनो ध्यान घडी दोय च्यारतो पंचपरमेष्टी तपज चवे बारे हो नरतषा म
सणीधार तो सांजे वेवीर सज्याकरे भावना बार वितेमन मायतो पद गुणे पाठ लीया तर ... द
णमरे अंजणा रादिन जायतो ४९ स दुहा पवन राय पधारीया लंका नगरी जाय ज्ञुप नली
परनेटी या अतिरलीयाय तथाय १ रावण रा जो तिणसमे कनुबे लास कहवार २ वरणउ प
रततपिता वही दलवल आतिविसता र २ ... वे अंजणा सुदरी गर्भ धर्यो तिण वार ३ गुप
त पणा रक्ता मणा कोइ नजाणे सार ४ गर्भ तणो तेजे वल दिनदिन वधतो ताम ५ पवन तणो प
रतो लो का नाणवा मध ढाल उदर अधीन जाली करी वेजणी नामी वेदा ने नी सालतो साथ रे 4
लानी तसा चरी दुनीया दोसने देवे आधारतो नितरपाअंवो षती सरी २ साहिस जु कारकारतो ॥

तावजलेमनवलटे दिनरचटस्तपरणांमञपारलो ५०स दिवसलीदो सयने विनवे सांजलोसां
एकवीनती आजेलो अंजनाकरे रेहमावली मरलओघरीयनकी मीरस्मारलो घरकामी चिलचा
कटकमेचालसामरदिखमानलो एरनेघरजायपुछ्या नाहितरकाढस्यएछनाप्राणलो स५१
सीमसासीनेसामीकने वासवीरेखी अरोगेछेपानलो आगलपाछनजावलो जावकजोइरष्मा
वेदांनलो सायसहेलीदे असघणी गंधूवगीलमावेलीएवारलो आगलफकीजनमें मीकलो स
कजीवजासणेघरेजायलो ५२ मैं सेरीरसकेरलरूफुलीया अणपायेलानेपाथरयापाटलो फुलकु
समउपरधरया जाणेमारीसासु आवेइणवाटलो देहसषीरेसामीगइ दरसेणदेयसाअणरवायलो स
सेरीरसकेरलरूफुलीया अणपगेलापाथरयापाटलो फुलकुसमउपरधरया जाणेमारा
सासुजी आवेइणवाटलो देहसषीरेसामीगइ दरसेणदेयलादोलोदुजायलो चेलीनावा
लयोमीकरी तिलकरीसासुनापुंजीयापायलो स५३ पालमी आगलेपाली वरेसासुन
नसकरैमनधीरलो सोवनपाटबेसाडने चरणपषालीनेपीधोरेनीरलो पथकुजेदुर्द
धूणा सासरेपादुरवोधीछेलाजलो तिथेसंसारनासकुफ त्यो मारासासरिपुजमे
टीकीधीआजलो स५४ चेड